Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

Original Article

पूर्वी चंपारण में कृषि के बदलते प्रारूप का भौगोलिक अध्ययन

कमलेश कुमार[1], डॉ. शीला कुमारी[2]

[1]शोध छात्र, विश्वविद्यालय भूगोल विभाग , बी.आर.ए.बिहार विश्वविध्यालय मुजफ्फरपुर, बिहार

[2]वरीय सहायक, प्राध्यापक, राममनोहर लोहिया स्मारक महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर

Email: kamleshkr19951@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-171227
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 12(A)
Pp. 125-127
December 2025

Submitted: 18 Nov. 2025
Revised: 28 Nov. 2025
Accepted: 13 Dec. 2025
Published: 31 Dec. 2025

सार संक्षेप

पूर्वी चंपारण में कृषि प्रतिरूप में व्यापक परिवर्तन हुआ है | विगत दो शताब्दियों में औद्योगीकरण एवं नगरीकरण की प्रक्रिया से कृषि का परम्परागत स्वरुप छिन्न – भिन्न हुआ है | वर्त्तमान समय में कृषि जीवन निर्वाह से व्यावसायिक स्वरुप में परिवर्तित हो चुकी है | कृषि के इस व्यावसायिक स्वरूप ने पर्यावरण को पूरी तरह से परिवर्तित कर दिया है | जिला की अर्थव्यवस्था का आधार कृषि है | यह जिला सामाजिक, ऐतिहासिक और आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान रखता है | समय के साथ कृषि के पद्धतियों में व्यापक परिवर्तन हुआ है | परम्परागत कृषि से आधुनिक कृषि पद्धति तक का सफ़र वास्तव में पूर्वी चंपारण जिला में व्यापक प्रभाव पड़ा है | इस अध्ययन का उद्देश्य परिवर्तनों के कारणों एवं प्रभावों का विश्लेषण करना है |

शब्द कुंजी: *कृषि परिवर्तन, पद्धति, विकास, प्रभाव आदि।*

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

पूर्वी चम्पारण जिला बिहार राज्य के उत्तर-पश्चिम में स्थित तिरहुत प्रमंडल का एक जिला है। यह जिला 26°16′ उत्तरी अक्षांश से 27°01′ उत्तरी अक्षांश तथा 84°30′ पूर्वी देशांतर से 85°16′ पूर्वी देशांतर के बीच अवस्थित है। इसके उत्तर में नेपाल तथा दक्षिण में गोपालगंज और दक्षिण में मुजफ्फरपुर जिला स्थित हैं। इसके पूर्व में शिवहर और सीतामढ़ी जिला तथा पश्चिम में पश्चिमी चम्पारण जिला स्थित है। इस जिला का मुख्यालय मोतिहारी है। इस जिला में उप उष्णकटिबंधीय मानसूनी जलवायु मिलती है। यहाँ की प्रमुख नदियाँ गंडक, बुढ़ी गंडक हैं, इसके अलावा सिकरहना, ललबकिया, तिलाबे, कचना आदि नदियाँ बहती है तथा यहाँ तिरहुत नहर प्रणाली भी विकसित है, जिससे कृषि के लिए सिंचाई एवं मत्स्यपालन में लाभ मिलता है। 2011 की जनगणना के अनुसार इस जिला की कुल जनसंख्या 50,99,371 है। जिसमें 2681209 पुरुष एवं 2418162 महिला जनसंख्या है तथा जिला का जनसंख्या घनत्व 1285 है। इसका कुल क्षेत्रफल 3968 वर्ग किलोमीटर है। 2021 की जनगणना वैश्विक महामारी कोरोना के कारण नहीं हो सकी है। फिर भी संभावित जनसंख्या (2021) 8158993 जनसंख्या है। इस जिला में 303923 हेक्टेयर भूमि खेती योग्य है जिसमें 176,115 हेक्टेयर में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है तथा गैर सिंचित भूमि 127,808 हेक्टेयर है।

शोध का उद्देश्य

शोध जिला पूर्वी चम्पारण में शोध का उद्देश्य है कृषि के वर्तमान स्वरूप को विश्लेषण करना। कृषि का स्वरूप परम्परागत पद्धति से वर्तमान तक का सफर का अध्ययन करना तथा कृषि पद्धतियों में आए भौगोलिक और तकनीकी परिवर्तनों को पहचान करना तथा कृषि में बदलाव के प्रमुख कारकों का अध्ययन करना। इतना ही नहीं इस जिला में किसानों पर इन परिवर्तन के कारण सामाजिक–आर्थिक प्रभावों का भी आंकलन करना है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
कमलेश कुमार, शोध छात्र, विश्वविद्यालय भूगोल विभाग , बी.आर.ए.बिहार विश्वविध्यालय मुजफ्फरपुर, बिहार

How to cite this article:
कुमार, . कमलेश ., & कुमारी, . शीला . (2025). पूर्वी चंपारण में कृषि के बदलते प्रारूप का भौगोलिक अध्ययन. Journal of Research and Development, 17(12(A)), 125–127. https://doi.org/10.5281/zenodo.18184931

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18184931
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

शोध पद्धति (विधिगत तंत्र)

प्रस्तुत शोध में प्राथमिक आँकड़ा अर्थात साक्षात्कार, प्रश्नावली के माध्यम से शोध के उद्देश्यों तक पहुँचने का प्रयास किया जाएगा। साथ ही द्वितीयक आँकड़ों के तहत सरकारी रिपोर्ट, जनगणना तथा कृषि विभाग से प्राप्त आँकड़ों के आधार वर्तमान कृषि प्रणाली में आए परिवर्तनों के बारे में अध्ययन किया जाएगा। प्राप्त आँकड़ों के आधार पर विश्लेषणात्मक पद्धति का सहारा लिया जाएगा।

कृषि प्रतिरूप में परिवर्तन

पूर्वी चम्पारण जिला में कृषि प्रतिरूप में परिवर्तन पिछले 10 वर्षों में देखा जा रहा है यहाँ वर्तमान में कृषि की नवीन तकनीकी, नवीन उर्वरक, कीटनाशकों का प्रयोग कर रहे हैं। साथ ही नवीन कृषि यंत्रों का उपयोग कर कृषि उत्पादन में वृद्धि की जा रही हैं। वर्तमान समय में सिंचाई हेतु जल संसाधन में वृद्धि से सिंचाई के क्षेत्र में अभूत-पूर्व वृद्धि हुई है। इस बदलते प्रारूप का विश्लेषण निम्नलिखित बिन्दुओं के द्वारा समझा जा सकता है –

(i) परम्परागत बनाम आधुनिक कृषि – शोध जिला ही नहीं सम्पूर्ण बिहार में पहले परम्परागत कृषि हल–बैल से की जाती थी, पुराने बीज को ही पुनः खेतों में बोई जाती थी। हल से खेत में जुताई अच्छी नहीं होती थी। समय भी बहुत लगता था, लेकिन बीते वर्षों में ट्रैक्टर से कृषि होने के कारण कृषि में परिवर्तन देखने को मिलता है। कृषि में ट्रैक्टर का प्रयोग होने से खेती की जुताई करने में कम समय लगता है जिससे श्रम लागत एवं समय की बचत होती है।

फसल चक्र में परिवर्तन –

शोध जिला पूर्वी चम्पारण में फसल चक्र में परिवर्तन होने से कृषि के प्रारूप में परिवर्तन देखने को मिलता है। पहले लोग मात्र धान–गेहूँ की की खेती जीवन निर्वहन के लिए करते थे, अब सब्जी, मक्का, केला, तम्बाकू आदि की खेती व्यवसायिक दृष्टि कर रहे हैं। जिससे धान–गेहूँ आधारित चक्र से नगदी फसलों में परिवर्तन देखने को मिल रहा है अर्थात अब मक्का, सब्जी, केला, मछली पालन, तम्बाकू आदि की कृषि की जा जा रही है जिससे कृषि क्षेत्र में परिवर्तन दृश्यमान हो रहा है। इस फसल चक्र में परिवर्तन से मिटटी की उर्वरता में वृद्धि हो रही है, कम लागत तथा पर्यावरण के अनुकूल खेती हो रही है जिससे पूर्वी चम्पारण जिला में किसानों की हालत सुधारती जा रही है।

सिंचाई में बदलाव

शोध जिला पूर्वी चम्पारण में पहले लोग मानसून आधारित या निर्भरता कृषि की जाती थी, लेकिन वर्तमान समय में ट्यूबवेल, डीजल पम्प, सौर सिंचाई का जमाना चल रहा है, जिससे कृषि के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन देखने को मिल रहा है। किसी भी फसल के लिए अच्छी उत्पादकता हेतु खेतों में समय–समय पर आवश्यकतानुसार सिंचाई की आवश्यकता होती है। सिंचाई के अभाव में लहलहाता फसल भी बर्बाद हो जाता है लेकिन वर्तमान समय में सरकार किसानों के प्रति विशेष विद्युत की आपूर्ति कर रही है जिससे कृषि के क्षेत्र में फायदा ही फायदा दिख रहा है । किसानों के ट्यूबवेल तक बिजली पहुँच बना दी गई है। पहले महंगे, डीजल से ट्यूबवेल चलाकर सिंचाई की जाती थी, लेकिन अब fo|qr वाली ट्यूबवेल चलाने से लागत कम आ रही है। जिससे कृषकों की हालत सुधारती जा रही है।

उर्वरक के उपयोग में परिवर्तन

पहले खेतों में जैविक खाद अर्थात् मात्र गोबर, राख आदि देकर खेती की जाती थी। लेकिन हरित क्रांति के बाद खेतों में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग बढ़ा है जिससे खेती में पैदावार की वृद्धि हुई है। पहले प्रति हेक्टेयर खाद्यान्न का उत्पादन कम होता था, जनसंख्या का होने के बावजूद भी हम भूखे रहते, प्रति व्यक्ति अन्न की उपलब्धता कम थी, लेकिन वर्तमान में रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से प्रति हेक्टेयर उत्पादन में वृद्धि हुई है। अनाज उत्पादन में हमारा देश भारत आत्मनिर्भर बना है। इतना ही नहीं विशेष परिस्थितियों में हम अनाज दूसरे देशों तक पहुँचाते भी हैं अर्थात् निर्यात भी करते हैं।

बाजार और विपणन व्यवस्था में परिवर्तन

शोध जिला में पहले उत्पाद को स्थानीय हाट-बाजार में बेचा जाता था, कभी – कभी उत्पादन अधिक होने के कारण फसल बर्बाद हो जाति थी जैसे सब्जी, फल आदि लेकिन वर्तमान में डिजिटल प्लेटफार्म होने के कारण उत्पादन बेचेने में कठिनाई नहीं होती है ।उचित दाम पर फसल की बिक्री हो जाति है जिससे कृषि के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन देखने को मिलता है।

कृषि परिवर्तन के कारण

शोध जिला पूर्वी चंपारण में जनसंख्या वृद्धि तीव्र गति से हुई। जनसंख्या वृद्धि के कारण भूमि का बंटवारा हुआ है। मानव की मौलिक आवश्यकताएँ बढ़ी हैं जिसके फलस्वरूप कृषि में परिवर्तन देखने को मिला है परम्परागत कृषि की जगह अब उन्नत बीज, रासायनिक खाद तथा आधुनिक कृषि यंत्रों का प्रयोग होने से फसल में अत्यधिक वृद्धि हुई है। इसके लिए सरकारी योजनाएँ, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, फसल बीमा योजना आदि परिवर्तन में अहम भूमिका निभा रही हैं। सरकार भी किसानों के विकास हेतु समर्पित

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

है। इसके साथ ही पहले अनपढ़ लोग ही खेती करते थे लेकिन वर्तमान में शिक्षित युवा वर्ग व्यवसाय की दृष्टि से खेती करने लगे है। उन्नत खाद-बीज, कीट नाशक, कृषि यंत्र आदि का प्रयोग उचित ढंग से कर रहे हैं । आवश्यकता अनुसार नई कृषि पैदावार के प्रशिक्षण भी कर रहे है, तैयार उत्पाद को डिजिटल प्लेटफार्म के माध्यम से बाहर भेज रहे हैं। सामूहिक कृषि को बढ़ावा दिया जा रहा है। जलवायु परिवर्तन एवं वर्षा की अनियमितता से कृषकों ने इससे निपटने का रास्ता बनाया है। अब सिंचाई पम्पिंग सेट, ट्यूबवेल आदि से आधुनिक ढंग से की जा रही है। जिससे पैदावार में वृद्धि हुई है।

प्रभाव

पूर्वी चंपारण जिला में कृषि के बदलते प्रारूप को जब अध्ययन करते हैं तो कुछ सकारात्मक प्रभाव व कुछ नकारात्मक प्रभाव देखने को मिलता है। सकारात्मक प्रभाव के अन्तर्गत उत्पादन में वृद्धि, नकद आय में वृद्धि, ग्रामीण युवाओं की कृषि में रूचि आदि आता है। कृषि के बदलते प्रारूप के कारण प्रति हेक्टेयर उत्पादन में वृद्धि हुई है, नकदी आय में वृद्धि हुई जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। रोजगार के अवसर कम होने के कारण ग्रामीण युवाओं की रूचि कृषि की ओर अग्रसर हुई है। इसमें युवा अच्छा कर रहे हैं। नई सोच, नई तकनीक का प्रयोग कर खेती के पैदावार में वृद्धि कर रहे हैं।

जबकि नकारात्मक प्रभाव के अन्तर्गत भूमिहीन किसानों की समस्या उभरकर सामने आती है। ऐसा देखा जाता है कुछ किसान खेती करना चाहते हैं लेकिन खेत नहीं है, भूमिहीन है। जबकि जिनके पास अपार खेत हैं वे खेती नहीं करना चाहते हैं। जिसके कारण प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव पड़ गया है साथ ही परम्परागत बीज और जैव विविधता में कमी आ गयी है। जो नकारात्मक प्रभाव की ओर इंगित करता है।

निष्कर्ष

पूर्वी चंपारण जिला में कृषि में हो रहे परिवर्तन भले ही उत्पादन और आय बढ़ाने में सहायक हो, लेकिन इसके साथ पारिस्थितिक संतुलन और सामाजिक विषमता जैसे प्रश्न भी जुड़े हुए हैं। यह आवश्यक है कि ये परिवर्तन सतत और समावेशी हो ताकि पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था भी सशक्त हो सके।

सुझाव

पूर्वी चंपारण जिला में कृषि के बदलते प्रारूप के सन्दर्भ में निम्नलिखित सुझाव है –

i. जैविक खेती को प्रोत्साहन
ii. जल संरक्षण तकनीकों का प्रयोग
iii. कृषि, शिक्षा व प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना
iv. छोटे किसानों के लिए अनुदान आधारित योजनाओं का विकास
v. ग्रामीण बाजार और पूर्ति श्रृंखला को मजबूत करना ।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, बी० एल० (1988), कृषि भूगोल, साहित्य भवन आगरा ।
2. तिवारी, आर. सी. एवं सिंह बी.एस. (1994) कृषि भूगोल प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहबाद
3. बिहार कृषि विभाग की वार्षिक रिपोर्ट।
4. जनगणना रिपोर्ट (2011)
5. विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय शोध पत्र।